No. of Printed Pages : 7

BHMCT-103

B. A. (PERFORMING ARTS) (HONOURS)HINDUSTANI MUSIC (BAPFHMH)

Term-End Examination

June, 2024

BHMCT-103 : FUNDAMENTALS OF HINDUSTANI MUSIC

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

Note : *All questions are compulsory.*

1. Write definition of any ***five*** of the following : 5×2=10

   (a) Advadarshak Swara
   (b) Shadaj Pancham Bhava
   (c) Deshi
   (d) Gram
   (e) Murchana
   (f) Grah Swara
   (g) Parmel Praveshak Raga

2. Fill in the blanks in the following sentences with suitable options : 10×2=20

   (a) The part of Saptak's Shadaj to Pancham is known as ..... .

(b) Ordinary, there is a rule to sing Purvang Vadi Ragas from 12 in the ..... to 12 in the ..... .

(c) The use of ..... is usually seen in evening sandhi prakhash ragas.

(d) Before Raga Gayan ..... Gayan was prevalent in Ancient India.

(e) In the twentieth century, Shri Narayan Moreshwar Khare introduced the method of ..... classification.

(f) The dandmatrik notation system was introduced by ..... .

(g) Gandharva Mahavidyalaya was established in Lahore by ....

(h) The classification of Ragas in medieval India was done according to the .... classification system.

(i) In the Baroda conference of 1916, ... was established as Shuddha Saptak.

(j) The originator of Thaat system was ....

Options : Ragang, Purvardh, Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande, Morning, Jati, Raja Saurindra Mohan Tagor, Tivra Madhyam,

Night, Raag-Ragini, Pandit Vishnu Digamleas Paluskar, Bilawal.

3. Write short notes on any ***six*** from the following : 6×5=30

   (a) Yadi-Samvadi-Anuvadi-Vivadi

   (b) Nyaas-Sanyass-Apanayaas-Vinyaas

   (c) Alpatva-Bahutva

   (d) Contribution of Sir William Jones in Indian Music.

   (e) Murchana's of Shadaj and Madhyam Gram.

   (f) Placement of Swaras in the Shruti scale of Shadaj Gram.

   (g) Brief description and swarmalika of Raga Bhupali.

   (h) Brief description and Swarmalika of Raga Alhaiya Bilawal.

   (i) Introduction and Theka of Tilwada Taal.

4. Write short notes on any ***two*** of the following : 2×20=40

   (a) Contribution of Raja Saurindra Mohan Tagor to the Indian Music ?

   (b) Contribution of Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande to the Indian Musuic ?

   (c) Detailed descriptiopn of 'Sangeet Ratnakar' ?

BHMCT-103

बी. ए. (प्रदर्शन कला) (ऑनस)
हिन्दुस्तानी संगीत
(बी.ए.पी.एफ.एच.एम.एच.)
सत्रांत परीक्षा
जून, 2024
बी.एच.एम.सी.टी.-103 : हिन्दुस्तानी संगीत के मूलभूत तत्व

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।*

1. निम्नलिखित किन्हीं **पाँच** की परिभाषा लिखिए : 5×2=10

(क) अध्वदर्शक स्वर

(ख) षडज पंचम भाव

(ग) देशी

(घ) ग्राम

(ङ) मूर्च्छना

(च) ग्रह स्वर

(छ) परमेल प्रवेशक राग

2. निम्नलिखित वाक्यों में खाली स्थानों को उचित विकल्प से भरिए : $10 \times 2 = 20$

(क) सप्तक के षडज से पंचम तक के भाग को ..... कहते हैं।

(ख) साधारण रूप से पूर्वांग वादी वाले राग ..... को बारह बजे से ..... के बारह बजे तक गाने का विधान है।

(ग) प्राय: सायंकालीन संधिप्रकाश रागों में ..... का प्रयोग दिखता है।

(घ) राग गायन से पहले प्राचीन भारत में ..... गायन का प्रचलन था।

(ङ) बीसवीं शताब्दी में श्री नारायण मोरेश्वर खरे ने ..... वर्गीकरण पद्धति का प्रचलन किया।

(च) दण्डमात्रिक स्वरलिपि पद्धति ..... की देन थी।

(छ) गांधर्व महाविद्यालय की स्थापना लाहौर में .... द्वारा की गई।

(ज) मधयकालीन भारत में रागों का वर्गीकरण .... वर्गीकरण पद्धति के अन्तर्गत किया जाता था।

(झ) सन् 1916 के बड़ौदा कॉनफरेन्स में ..... को शुद्ध सप्तक के रूप प्रतिष्ठित किया गया।

(ज) थाट पद्धति के प्रवर्तक .... थे।

विकल्प : रागांग, पूर्वार्ध, पं. विष्णुनारायण भातखंडे, दिन के, जाति, राजा सौरीन्द्र मोहन ठाकुर, तीव्र मध्यम, रात्रि के, राग-रागिनी, पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, बिलावल।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **छः** विषयों पर संक्षिप्त नोट लिखिए : 5×6=30

(क) वादी-सम्वादी-अनुवादी-विवादी

(ख) न्यास-संन्यास-अपन्यास-विन्यास

(ग) अल्पत्व-बहुत्व

(घ) सर विलियम जोन्स का भारतीय संगीत में योगदान

(ङ) षडज ग्राम व मध्यम ग्राम की मूर्च्छनायें

(च) प्राचीन षड्ज ग्रामीण श्रुति स्वर व्यवस्था की तालिका

(छ) राग भूपाली का संक्षिप्त विवरण तथा स्वरमालिका

(ज) राग अल्हैया बिलावल का संक्षिप्त विवरण और स्वरमालिका

(झ) तिलवाड़ा ताल का परिचय और ठेका

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** क विस्तारपूर्वक उत्तर दीजिये : 2×20=40

(क) राजा सौरीन्द्र मोहन ठाकुर का भारतीय संगीत में योगदान

(ख) पं. विष्णु नारायण भातखण्डे का भारतीय संगीत में योगदान

(ग) 'संगीत रत्नाकर' ग्रन्थ का विस्तृत विवरण